कुवर मंगेश प्रल्हाद / International Journal for Research in Education (IJRE) (I.F. 6.002)

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

महाराष्ट्र में दलित आंदोलन के विकास पर मराठी प्रेस का प्रभाव (1900–1950): सामाजिक सुधार, पहचान निर्माण और राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन

DOI: https://doi.org/10.63345/ijre.v14.i12.1

कुवर मंगेश प्रल्हाद

अनुसंधानार्थी

महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय

उत्तराखंड

डॉ. सुचिता उपाध्याय

मार्गदर्शक

महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय

उत्तराखंड

सार— इस शोध का उद्देश्य 1900 से 1950 के बीच महाराष्ट्र में विकसित हो रहे दलित आंदोलन और मराठी प्रेस के परस्पर संबंधों का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह अध्ययन तीन आयामों—(1) सामाजिक सुधार, (2) दलित सामूहिक पहचान का निर्माण, और (3) राजनीतिक जागरूकता एवं संगठित संघर्ष—के संदर्भ में मराठी प्रेस की भूमिका को समझने का प्रयास करता है। शोध में ऐतिहासिक-व्याख्यात्मक पद्धति अपनाई गई है, जिसमें आंबेडकर-सम्बन्धी प्रमुख पत्रों (*मूकनायक*, *बहिष्कृत भारत*, *जनता* आदि) तथा अन्य मराठी समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की सामग्री का गुणात्मक पाठ-विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, पूर्ववर्ती शोध-साहित्य, आत्मकथाओं, सरकारी प्रतिवेदनों और समकालीन टिप्पणियों को पूरक स्रोत के रूप में उपयोग किया जाएगा, ताकि दलित अनुभव, भाषा और विमर्श की निरंतरता तथा परिवर्तन दोनों को समझा जा सके।

प्रारम्भिक निष्कर्ष संकेत करते हैं कि जहाँ मुख्यधारा मराठी प्रेस पर उच्च-वर्ण वर्चस्व बना रहा, वहीं दलित प्रेस ने "मूक" समुदायों के लिए एक स्वतंत्र सार्वजनिक मंच तैयार किया। आंबेडकर की पत्रकारिता ने दया या दान पर आधारित सुधारवादी दृष्टिकोण से आगे बढ़कर अधिकार, प्रतिनिधित्व, आत्मसम्मान और सामाजिक न्याय पर केन्द्रित संघर्षशील भाषा विकसित की। 1930 के बाद दलित प्रेस ने किसान–मज़दूर प्रश्नों, संवैधानिक अधिकारों और लोकतांत्रिक राजनीति को दलित एजेंडा से जोड़ा, जिससे आंदोलन का वैचारिक क्षितिज व्यापक हुआ।

यह शोध न केवल दलित आंदोलन के इतिहास में मराठी प्रेस की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित करता है, बल्कि आधुनिक भारतीय लोकतंत्र में मीडिया, जाति और सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्सम्बंधों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक ढांचा भी प्रस्तावित करता है।

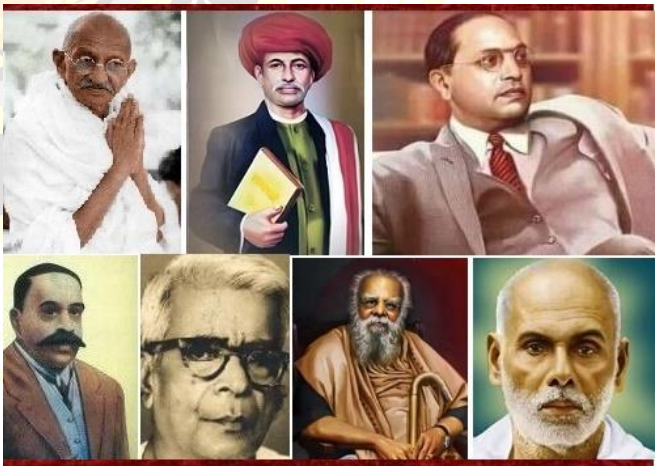

स्रोत: http://itihasnama.com/our-chepter/lower-caste-or-dalit-movement-in-india

I. परिचय

भारत के सामाजिक इतिहास में महाराष्ट्र एक ऐसा क्षेत्र रहा है, जहाँ जाति-आधारित असमानताओं और उनके विरुद्ध चलने वाले प्रतिरोध—दोनों ने ही सार्वजनिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में, जब राष्ट्रीय आंदोलन गति पकड़ रहा था, उसी समय महाराष्ट्र में अस्पृश्य जातियों के स्वाभिमान, अधिकार और सामाजिक मान्यता के लिए एक सशक्त

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

दलित आंदोलन उभर रहा था। इस परिवर्तनशील दौर में प्रिंट संस्कृति, विशेषकर मराठी प्रेस, राजनीतिक और सामाजिक चेतना के प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम बनकर सामने आई।

स्रोत: https://indianhistorycollective-com.translate.goog/a-subaltern-speaks-dalit-womens-counter-history-of-1857/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=imgs

1900 से 1950 के मध्य का काल औपनिवेशिक शासन, गैर-ब्राह्मण आंदोलनों, श्रमिक राजनीति और आंबेडकरवादी विचारधारा के विकास का निर्णायक चरण था। इस दौरान मुख्यधारा के अखबारों पर उच्च-वर्ण वर्चस्व कायम रहा, जिसके चलते दलित समुदाय की वास्तविक समस्याएँ अक्सर उपेक्षित रहीं या सीमित परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत की गईं। इसके प्रत्युत्तर में दलित नेताओं और बुद्धिजीवियों ने स्वतंत्र प्रेस की स्थापना की, जो दलित अनुभवों, अस्मिता, अपमान और संघर्षों को स्वयं उनकी आवाज़ में अभिव्यक्त करने का माध्यम बना।

डॉ. बी. आर. आंबेडकर की पत्रकारिता ने इस प्रक्रिया को नया मोड़ दिया। *मूकनायक*, *बहिष्कृत भारत* और *जनता* जैसे पत्रों के माध्यम से उन्होंने दलितों की राजनीतिक भागीदारी, शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय और धार्मिक स्वतंत्रता को केंद्र में रखा। इन पत्रों ने न केवल सुधारवादी विमर्श को चुनौती दी बल्कि दलित समुदाय में प्रतिरोध की भाषा और सामूहिक पहचान भी विकसित की।

अतः यह शोध इस बात का विश्लेषण करता है कि मराठी प्रेस ने—केवल सूचना प्रसार का साधन होने से आगे—दलित आंदोलन को वैचारिक नेतृत्व, संगठनात्मक ऊर्जा और लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूकता कैसे प्रदान की। यह अध्ययन मीडिया-इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीतिक संचार और जाति-अध्ययन जैसे विविध शैक्षणिक क्षेत्रों को जोड़ते हुए, आधुनिक भारत में मीडिया और सामाजिक परिवर्तन के जटिल संबंधों को समझने का प्रयास करता है।

II. साहित्य समीक्षा

1. भूमिका: विषय और शोध-क्षेत्र की रूपरेखा

औपनिवेशिक महाराष्ट्र में मराठी प्रेस ने सार्वजनिक क्षेत्र (public sphere) के निर्माण, जाति-विमर्श और सामाजिक सुधार की राजनीति को गहराई से प्रभावित किया। वेणा नरेगल, अनुपमा राव, गेल ऑम्वेड्ट, ऐलेनर ज़ेलियट और हाल के शोध (जैसे बागेश्री बागेश्वर, श्रिकांत बोट्रे आदि) दिखाते हैं कि 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भाषा, जाति और प्रिंट मीडिया ने मिलकर गैर-ब्राह्मण व दलित राजनीति की वैचारिक ज़मीन तैयार की।

यह साहित्य समीक्षा तीन आयामों—(1) सामाजिक सुधार, (2) पहचान-निर्माण, और (3) राजनीतिक जागरूकता—के आधार पर 1900–1950 के बीच मराठी प्रेस और दलित आंदोलन के अंतर्सम्बंधों का आकलन करती है।

2. औपनिवेशिक महाराष्ट्र में मराठी प्रेस और सार्वजनिक क्षेत्र

वेणा नरेगल की पुस्तक *Language, Politics, Elites and the Public Sphere: Western India Under Colonialism* मराठी प्रेस को "मध्यवर्गीय" एलाइट प्रोजेक्ट के रूप में पढ़ती है, जो अंग्रेज़ी और मराठी के द्विभाषिक सत्ता-संबंधों के बीच काम करता था। उनका तर्क है कि मराठी प्रेस ने औपनिवेशिक पश्चिम भारत में भाषाई पदानुक्रम, जाति-संबंध और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को पुनर्गठित किया, पर शुरुआती दशकों में इसका नियंत्रण मुख्यतः ब्राह्मण और उच्च-वर्ण नेतृत्व के हाथ में था।

श्रिकांत बोट्रे की पीएचडी थीसिस *The Body Language of Caste* (2017) 1920–1950 के बीच "मराठी साहित्यिक प्रकाशन जगत" का विश्लेषण करते हुए दिखाती है कि इस अवधि में मराठी प्रेस और पत्रिकाओं का जबरदस्त विस्तार हुआ, किंतु साहित्यिक और पत्रकारिता-संस्थान ब्राह्मण पुरुषों के प्रभुत्व वाले रहे; गैर-ब्राह्मण, साम्यवादी और दलित प्रेस समानांतर लेकिन अपेक्षाकृत हाशिये पर स्थित थे। यह ढांचा बताता है कि दलित प्रेस को किस तरह एक "काउंटर-पब्लिक" के रूप में अपना स्पेस बनाना पड़ा।

आर.के. लेले की *Marathi Vritta Patrancha Itihas* (जिसका उल्लेख बोट्रे द्वारा किया गया है) मराठी प्रेस के इतिहास में विविध धाराओं—सुधारवादी, राष्ट्रवादी, गैर-ब्राह्मण और बाद में दलित प्रेस—की उपस्थिति का संक्षिप्त मानचित्र देती है; यह कार्य तथ्यों के स्तर पर पृष्ठभूमि प्रदान करता है, हालांकि विशेष रूप से दलित राजनीति के कोण से इसका विश्लेषण सीमित है।

3. प्रारम्भिक दलित/शूद्रातिशूद्र पत्रकारिता की पृष्ठभूमि (1900 से पहले और शुरुआती 20वीं सदी)

बागेश्री आर. बागेश्वर का लेख "Emergence of Marathi Dalit Periodicals: A Brief Survey" (Fortell, 2021) औपनिवेशिक महाराष्ट्र में दलित पत्रिकाओं के विकास को दो चरणों—1920 से पहले और 1920 के बाद—में बाँटकर विश्लेषित करता है। "पहले चरण" में वे गोपाल बाबा वलंगकर (पत्र *Vital-Vidhvansak*, 1888), शिवराम जनबा कांबळे, किसान फागु बंडसोडे आदि के प्रयासों को रेखांकित करती हैं, जिन्होंने ब्राह्मण-नियंत्रित मुख्यधारा मराठी पत्रों (जैसे

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

केसरी, *काळ*, *दीनबंधु*, *ज्ञानप्रकाश* आदि) में लेख लिखकर तथा अपनी छोटी पत्रिकाएँ निकालकर अस्पृश्यों के प्रश्नों को सार्वजनिक बहस में लाया।

यद्यपि ये प्रयास 19वीं सदी के अंतिम दशकों से शुरू होते हैं, इनसे यह स्पष्ट होता है कि 1900 तक ही सामाजिक सुधार और दलित स्वाभिमान के लिए मराठी प्रिंट-संस्कृति एक महत्वपूर्ण औज़ार बन चुकी थी। इस पृष्ठभूमि के बिना 1900–1950 की दलित प्रेस को समझना अधूरा रहेगा।

4. गैर-ब्राह्मण आंदोलन, सामाजिक सुधार और प्रेस (1900–1920)

गेल ऑम्वेड्ट की क्लासिक कृति *Cultural Revolt in a Colonial Society: The Non-Brahman Movement in Western India, 1873–1930* गैर-ब्राह्मण आंदोलन को "सांस्कृतिक विद्रोह" के रूप में पढ़ती है। वह दिखाती हैं कि सत्यशोधक समाज, गैर-ब्राह्मण सभाएँ और मराठी प्रेस (विशेष रूप से गैर-ब्राह्मण और सुधारवादी पत्र) मिलकर जाति-आधारित सत्ता-ढाँचों को चुनौती दे रहे थे।

एम.एस. गोरे और अन्य इतिहासकारों ने भी गैर-ब्राह्मण आंदोलन की बहसों में प्रेस की भूमिका—नई सामाजिक भाषा, समानता, शिक्षा और अंतरजातीय विवाह की वकालत—को महत्वपूर्ण बताया है। हालांकि ये कार्य सीधे "दलित" आंदोलन को केन्द्र नहीं बनाते, पर शूद्र-अतिशूद्र सार्वजनिक क्षेत्र के निर्माण में मराठी प्रेस की भूमिका को सामने लाते हैं, जिससे बाद के आंबेडकरवादी दलित प्रेस के लिए वैचारिक जमीन तैयार हुई।

इसके समानान्तर, अनुपमा राव यह तर्क करती हैं कि 19वीं सदी के अंतिम वर्षों से 1920 के दशक तक दलित (मुख्यतः महार) सार्वजनिक विमर्श ने शूद्र-अतिशूद्र की व्यापक पहचान से अलग होकर "अस्पृश्य" अनुभव को विशिष्ट रूप से सामने रखा, और प्रिंट-जर्नलिज़्म ने इस "दलित सार्वजनिक क्षेत्र" को पोषित किया। 1877–1929 के बीच अनेक पत्रों ने जातिगत वंचनाओं को विषय बनाकर एक नई दलित पहचान गढ़ने की कोशिश की।

5. आंबेडकर की पत्रकारिता और मराठी दलित प्रेस का संस्थानीकरण (1920–1930)

साहित्य में लगभग सर्वसम्मति है कि 1920 का दशक महाराष्ट्र के दलित आंदोलन और दलित प्रेस, दोनों के लिए टर्निंग-पॉइंट है।

5.1 *मूकनायक* (1920–1923)

बागेश्वर के अनुसार, डॉ. बी.आर. आंबेडकर की पत्रकारिता-मेंट्री *Mooknayak* (31 जनवरी 1920) दलित पत्रिकाओं के इतिहास में गुणात्मक मोड़ का संकेत देती है। वे दिखाती हैं कि *मूकनायक* के पहले अंक के मुखपृष्ठ पर संत तुकाराम के अभंग की पंक्तियाँ उद्धृत की गयीं, जिनका आशय "गूंगे की ज़बान खुलवाना" था—यहीं से "मूकनायक" शीर्षक का वैचारिक अर्थ निकलता है। आंबेडकर ने पहले ही अंक में यह तर्क दिया कि मुख्यधारा पत्र (जैसे *दीनमित्र*, *जागृक*, *डेक्कन रायट*, *ज्ञानप्रकाश*, *इंदुप्रकाश*, *सुबोधपत्रिका* आदि) कभी-कभार अस्पृश्यों के प्रश्न उठाते हैं, पर एक स्वतंत्र दलित मंच की आवश्यकता है।

Forward Press और Velivada जैसे स्रोत *मूकनायक* को "दलित आंदोलन के अंग-पत्र" के रूप में चित्रित करते हैं, जिसमें आंबेडकर ने अस्पृश्यताओं के सवालों को राष्ट्रीय राजनीति से जोड़ा, गांधी और कांग्रेस की नीतियों पर आलोचनात्मक टिप्पणी की, और जाति-उच्छेद को सामाजिक न्याय का आधार बनाया।

5.2 *बहिष्कृत भारत* (1927–1929)

बागेश्वर और Forward Press दोनों बताते हैं कि विदेश से लौटने के बाद आंबेडकर ने 1927 में *Bahishkrit Bharat* ("बहिष्कृत भारत") शुरू किया, जिसका उद्देश्य अस्पृश्य समुदायों की राजनीतिक संगठित चेतना को तेज करना था। इस पत्र के संपादकीयों में आंबेडकर ने हिन्दू धर्मशास्त्र, जाति-व्यवस्था और राज्य की भूमिका पर तीखा वैचारिक हमला किया; बागेश्वर के शब्दों में, यह पत्र अस्पृश्यों के "स्वतंत्र मानव-व्यक्तित्व और सामाजिक पहचान" को पुनःस्थापित करने की लड़ाई का मंच बन गया।

Forward Press और Round Table India के लेखों में यह भी रेखांकित है कि *मूकनायक*, *बहिष्कृत भारत* और बाद के पत्र, आंबेडकर की उस रणनीति का हिस्सा थे जिसके तहत प्रेस को आंदोलन का संगठनात्मक, वैचारिक और भावनात्मक आधार बनाया गया।

5.3 वैचारिक परिवर्तन: विनम्र याचना से संघर्ष-प्रधान भाषा तक

बागेश्वर के निष्कर्ष में, 1920 से पहले की दलित पत्रिकाएँ अपेक्षाकृत विनम्र, "याचक" शैली में ब्राह्मण समाज और औपनिवेशिक राज्य से सुधार की प्रार्थना करती थीं; जबकि आंबेडकर के बाद की पत्रिकाएँ (विशेषकर *मूकनायक* और *बहिष्कृत भारत*) संघर्षशील और आत्मसम्मान-केंद्रित भाषा अपनाती हैं, जो दलितों को "लड़ने वाला समुदाय" (fighting community) के रूप में गढ़ती है। यह परिवर्तन पहचान-निर्माण और राजनीतिक जागरूकता दोनों स्तरों पर निर्णायक था।

6. *जनता* और 1930–1950 के दशक की राजनीतिक चेतना

1930 से 1950 के बीच *Janata* (और बाद में *Prabuddha Bharat*) ने आंबेडकरवादी राजनीति का दीर्घकालिक मंच प्रदान किया। *Emergence of Marathi Dalit Periodicals* और EPW-Engage के लेख "Seeking Political Alternative: Perspectives on Peasants" दोनों इस बात पर ज़ोर देते हैं कि *मूकनायक* (1920–1923), *बहिष्कृत भारत* (1927–1929), *जनता* (1930–1956) और *प्रबुद्ध भारत* (1956–) मिलकर एक सतत वैचारिक प्रवाह निर्मित करते हैं।

EPW-Engage का लेख दिखाता है कि 1930 के दशक में आंबेडकर ने दलित आंदोलन को व्यापक वर्ग-राजनीति से जोड़ने की ज़रूरत पहचानी; *जनता* में

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

किसान-मज़दूर प्रश्नों पर नियमित लेखन के माध्यम से उन्होंने ज़मींदारी, श्रम-शोषण और जाति-आधारित अन्याय को एक ही शोषण-संरचना के रूप में प्रस्तुत किया। इससे दलित आंदोलन केवल सामाजिक सुधार तक सीमित न रहकर राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था के प्रश्नों से भी जुड़ता है।

इसी अवधि पर अनुपमा राव और ऐलेनर ज़ेलियट दोनों ध्यान देती हैं। राव के लिए यह काल "कास्ट रैडिकलिज़्म" के विकास का है, जहाँ दलित प्रेस धार्मिक-अनुष्ठानिक अस्पृश्यता को "सामाजिक-राजनीतिक अन्याय" के रूप में पुनर्परिभाषित करता है। वहीं ज़ेलियट *From Untouchable to Dalit* में आंबेडकरवादी आंदोलन के तीन चरणों—सुधारवाद, राजनीतिक संगठित संघर्ष, और 1940 के बाद धार्मिक रूपांतरण/बौद्ध आंदोलन की ओर—का विश्लेषण करती हैं, और इन सब में आंबेडकर के पत्रों की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित करती हैं।

7. मुख्यधारा मराठी प्रेस और दलित प्रश्न

Prachi Deshpande और Shrikanth Botre जैसे शोधकर्ताओं का तर्क है कि 1920–1950 के बीच मराठी प्रेस का "मुख्यधारा" खंड (साहित्यिक पत्र, राष्ट्रवादी दैनिक आदि) अब भी ब्राह्मण पुरुषों के नियंत्रण में था; दलित और गैर-ब्राह्मण आवाज़ें यद्यपि उपस्थित थीं, परकरण वे प्रायः हाशिये पर या "विशेष स्तम्भों" तक सीमित रहीं।

बागेश्वर दिखाती हैं कि किसान फागु बंडसोडे जैसे शुरुआती दलित पत्रकार न केवल अपनी पत्रिकाएँ (*Nirashrit Hind Nagarik*, *Majur Patrika*, *Chokhamela* आदि) चलाते थे, बल्कि *Kesari*, *Kaal*, *Deenbandhu*, *Subodhpatrika* जैसे गैर-दलित पत्रों में भी लिखते थे और दलित मुद्दों को वहाँ टिकाने की कोशिश करते थे। इससे संकेत मिलता है कि मुख्यधारा मराठी प्रेस में दलित उपस्थिति पूरी तरह अनुपस्थित नहीं थी, पर उनकी एजेंसी सीमित थी।

समकालीन मीडिया-अध्ययन (जैसे K. Koushik द्वारा "Working Conditions of Dalit Journalists in India" या "Caste System and Indian Media: A Complex Relationship") यह दिखाते हैं कि भारतीय मीडिया में दलितों की संरचनात्मक अनुपस्थिति और जातिगत पूर्वाग्रह की परंपरा 19वीं सदी से चली आती है। हालाँकि ये अध्ययन हमारे समय पर केन्द्रित हैं, वे ऐतिहासिक रूप से यह संकेत देते हैं कि मराठी प्रेस में भी ब्राह्मण वर्चस्व ने दलित आवाज़ों को सीमित किया, जिसके प्रतिरोध में दलितों ने अपनी स्वतंत्र प्रेस पर ज़ोर दिया।

8. पहचान-निर्माण और "दलित सार्वजनिक क्षेत्र"

अनुपमा राव के अनुसार, महार-केंद्रित दलित राजनीति ने प्रिंट जर्नलिज़्म के माध्यम से "दलित सार्वजनिक क्षेत्र" विकसित किया, जहाँ जाति-अनुभव, अपमान, स्वाभिमान और अधिकार-दावे को एक नए राजनीतिक भाषिक ढाँचे में व्यक्त किया गया। इस ढांचे में मराठी भाषा की भूमिका निर्णायक थी—आंबेडकर द्वारा मराठी में पत्र निकालना इसीलिए एक सचेत चयन था, ताकि ग्रामीण-शहरी दलित जनता सीधे संबोधित हो सके। हाल की रिपोर्टें भी यह रेखांकित करती हैं कि उन्होंने *मूकनायक* को मराठी में ही इसलिए निकाला कि महाराष्ट्र के दलितों की जनभाषा मराठी थी और अधिकांश पाठक अंग्रेज़ी या उच्च संस्कृतनिष्ठ हिंदी नहीं पढ़ सकते थे।

बागेश्वर की व्याख्या में 1920 के बाद के दलित पत्रों में भाषा और शैली में "स्वर-परिवर्तन" स्पष्ट दिखता है—नैतिक विनती से हटकर संघर्ष, आत्म-सम्मान, संगठन और धर्म-परिवर्तन (conversion) तक; यह सब पहचान-निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा है। आंबेडकर टाइम्स जैसे प्रकाशनों के लेख यह भी दिखाते हैं कि *मूकनायक* और *बहिष्कृत भारत* के संपादकीय प्रबंधन में आंबेडकर की सीधी भूमिका थी और 1930 के बाद *जनता* के माध्यम से उन्होंने संविधान, प्रतिनिधित्व, पृथक निर्वाचिका, और अंततः बौद्ध दीक्षा की दिशा में विचारधारा को परिपक्व किया।

ऐलेनर ज़ेलियट इस समूची प्रक्रिया को "Untouchable से Dalit बनने" की ऐतिहासिक यात्रा के रूप में देखती हैं, जिसमें प्रेस एक केंद्रीय उपकरण है—न केवल सूचना के प्रसार के लिए बल्कि इतिहास-लेखन, स्मृति-निर्माण और वैचारिक संगठितता के लिए भी।

9. समकालीन शोध-दिशाएँ और सीमाएँ

हाल के लेख, जैसे बागेश्वर (2021), EPW-Engage (2022) और Round Table India/Forward Press के विश्लेषण, विशेष रूप से आंबेडकरवादी प्रेस पर केन्द्रित हैं और दिखाते हैं कि दलित पत्रों ने सामाजिक सुधार (शिक्षा, अंध-विश्वास-विरोध, स्त्री-शिक्षा), पहचान-निर्माण (अस्पृश्य से "दलित" तक) और राजनीतिक जागरूकता (फ्रैंचाइज़, प्रतिनिधित्व, किसान-मज़दूर एकता) तीनों स्तरों पर भूमिका निभाई।

फिर भी 1900–1950 के विशेष फ़ोकस से देखें तो कुछ प्रमुख शोध-रिक्तियाँ सामने आती हैं:

1. **मात्रात्मक मीडिया-विश्लेषण की कमी** – कौन-से वर्षों में कौन-से दलित/गैर-ब्राह्मण पत्र कितनी आवृत्ति से निकल रहे थे, उनकी प्रसार-संख्या, भौगोलिक वितरण आदि पर व्यवस्थित डेटा बहुत कम उपलब्ध है।
2. **पाठ-अनुवीक्षण (textual analysis) की सीमितता** – आंबेडकर के संपादकीयों पर तो कुछ विश्लेषण हैं, पर दलित और मुख्यधारा मराठी पत्रों के संपादकीय-कॉर्पस का तुलनात्मक पाठ-विश्लेषण अभी भी कम है।
3. **क्षेत्रीय विविधता** – बंबई-पुणे केंद्रित दलित प्रेस पर बहुत कार्य हुआ है, पर विदर्भ, मराठवाड़ा आदि क्षेत्रों में मराठी प्रेस और दलित राजनीति के संबंध पर अपेक्षाकृत कम शोध है।
4. **जेंडर और प्रेस** – दलित स्त्री-पत्रकारों या महिलाओं की भागीदारी पर इस अवधि के लिए विशेष अध्ययन दुर्लभ हैं; अधिकतर लेखन "पुरुष संपादकों" पर केन्द्रित रहा है।

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

क्रम	लेखक / वर्ष	अध्ययन का फोकस	मुख्य निष्कर्ष (पुनर्लिखित)	अनुसंधान में योगदान
1	वेणा नरेगल (2002)	औपनिवेशिक महाराष्ट्र में भाषा-राजनीति और प्रेस	मराठी प्रेस ने सार्वजनिक क्षेत्र का निर्माण किया, लेकिन शुरुआती नियंत्रण उच्च-वर्ण के हाथों में रहा, जिससे दलित आवाज़ों को अपने स्वतंत्र मंच की खोज करनी पड़ी।	दलित प्रेस के उभार को "काउंटर-पब्लिक" के रूप में समझने का सैद्धांतिक ढाँचा प्रदान
2	बागेश्री आर. बागेश्वर (2021)	मराठी दलित पत्रिकाओं का विकास	शुरुआती दलित पत्रकारिता याचक-स्वर में थी, पर 1920 के बाद आंबेडकरवादी प्रेस ने संघर्ष-आधारित पहचान और स्वाभिमान के विमर्श को स्थापित किया।	औपनिवेशिक काल की दलित प्रेस का कालक्रम व स्वर-परिवर्तन स्पष्ट
3	श्रिकांत बोट्रे (2017)	मराठी साहित्यिक प्रकाशन और जाति-वर्चस्व	1920–50 के दौरान मुख्यधारा मराठी पत्रकारिता पर ब्राह्मण वर्चस्व कायम रहा; दलित प्रेस समानांतर लेकिन प्रभावशाली काउंटर-स्पेस बना।	मीडिया-संस्थानों के सामाजिक ढाँचों का विश्लेषण
4	गेल ऑम्वेड्ट (1976/2011)	गैर-ब्राह्मण आंदोलन और सांस्कृतिक विद्रोह	गैर-ब्राह्मण आंदोलन ने जाति-आलोचना को उभारा और दलित आंदोलन की वैचारिक भूमि तैयार की, जिसमें प्रेस एक सक्रिय उपकरण बना।	दलित राजनीति के पूर्ववर्ती सामाजिक आधार को स्पष्ट करती है।
5	अनुपमा राव (2009)	दलित राजनीति में पहचान निर्माण	प्रेस ने "अस्पृश्य" अनुभव को राजनीतिक भाषा प्रदान की और दलित सार्वजनिक क्षेत्र को आकार दिया।	पहचान-निर्माण और भाषा-राजनीति पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोण
6	ऐलेनर ज़ेलियट (1992/2001)	आंबेडकर आंदोलन का इतिहास	आंबेडकर द्वारा संपादित पत्र दलितों की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक चेतना के विकास में केंद्रीय रहे।	दलित आंदोलन के चरणबद्ध विकास का विश्लेषण
7	Forward Press रिपोर्ट (2020)	*मूकनायक* का राजनीतिक महत्व	पहली बार दलित मुद्दों को राष्ट्रीय राजनीतिक बहस से सीधे जोड़ा गया, गांधी और कांग्रेस पर आलोचनात्मक दृष्टि विकसित हुई।	दलित राजनीति की assertive भाषा के विकास को रेखांकित
8	Forward Press (2020)	*बहिष्कृत भारत* का योगदान	पत्र ने दलित समुदाय को सामूहिक संघर्ष और अधिकार-दावे की दिशा दी; जाति-व्यवस्था की संरचनात्मक आलोचना की।	दलितों की राजनीतिक एजेंसी को सशक्त बनाना
9	EPW-Engage (2022)	दलित आंदोलन और वर्ग-राजनीति	*जनता* के माध्यम से दलित आंदोलन को किसान-मज़दूर प्रश्नों और लोकतांत्रिक राजनीति से जोड़ा गया।	दलित आंदोलन का सामाजिक-आर्थिक विस्तार दर्शाता
10	Round Table India (2012)	आंबेडकर और मीडिया-रणनीति	प्रेस को वैचारिक-प्रसार और संगठन-निर्माण दोनों के साधन के रूप में अपनाया गया।	दलित पत्रकारिता के लक्ष्य और रणनीतियों का विश्लेषण
11	Prachi Deshpande (क्रॉस-साइटेड)	मराठी सार्वजनिक क्षेत्र में भाषा	भाषा-आधारित पहचान ने समुदाय और राजनीति दोनों को पुनर्गठित किया; उच्च-वर्ण प्रेस की सीमाओं ने दलित प्रेस को वैकल्पिक आवाज़ बनाया।	भाषा-आधारित सामाजिक विभाजन को रेखांकित

III. अनुसंधान पद्धति

इस शोध में 1900 से 1950 के मध्य महाराष्ट्र में दलित आंदोलन के विकास एवं मराठी प्रेस की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। अनुसंधान पद्धति ऐतिहासिक तथा गुणात्मक दोनों स्वरूपों पर आधारित है, जिससे विषय के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आयामों को समग्र रूप से समझा जा सके। अध्ययन के प्रमुख घटक निम्नानुसार हैं:

1. अनुसंधान स्वरूप

यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक विचार-धाराओं और प्रिंट माध्यम की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा। शोध का उद्देश्य तथ्यों का संग्रह मात्र नहीं, बल्कि उनके अंतर्निहित अर्थ, प्रभाव और परिवर्तनशीलता को स्पष्ट करना है।

2. अध्ययन की प्रकृति

गुणात्मक पद्धति के अंतर्गत प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का विस्तार से विश्लेषण किया जाएगा। समाचारपत्रों, संपादकीय लेखों, भाषणों, ज्ञापनों, आत्मकथाओं तथा संस्मरणों की सामग्री को संदर्भित करते हुए दलित आंदोलन की दिशा, स्वर और वैचारिक विकास को समझना लक्ष्य है।

3. डेटा स्रोत

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

अध्ययन में दो प्रकार के स्रोत उपयोग किए जाएंगे:

(क) प्राथमिक स्रोत

- *मूकनायक*, *बहिष्कृत भारत*, *जनता* आदि मराठी पत्रों के चयनित अंक
- तत्कालीन सरकारी दस्तावेज, रिपोर्ट एवं अध्यादेश
- डॉ. आंबेडकर और समकालीन नेताओं के लेख, भाषण, प्रतिवेदन

(ख) द्वितीयक स्रोत

- विद्वानों के शोध-ग्रंथ, जर्नल लेख, समीक्षाएँ
- सामाजिक आंदोलन एवं प्रिंट-संस्कृति पर आधारित अध्ययन
- मराठी प्रेस के इतिहास तथा दलित राजनीति पर प्रकाशित साहित्य

4. अनुसंधान तकनीक

निम्न तकनीकों का उपयोग किया जाएगा:

1. सामग्री विश्लेषण: दलित मुद्दों के प्रस्तुतिकरण, भाषा, तर्क-वितर्क एवं पत्रकारीय स्वर का विश्लेषण किया जाएगा। प्रमुख विषय-विमर्श जैसे सामाजिक सुधार, शिक्षा, प्रतिनिधित्व, आत्मसम्मान और राजनीतिक भागीदारी की लगातार तुलना की जाएगी।
2. तुलनात्मक विश्लेषण: मुख्यधारा मराठी प्रेस एवं दलित प्रेस के बीच अंतर को स्पष्ट करने हेतु दोनों के विचार, स्थिति-निर्माण और समाचार चयन के आधारों का तुलनात्मक मूल्यांकन किया जाएगा।
3. ऐतिहासिक व्याख्या: प्रेस में प्रतिबिंबित घटनाओं को उस समय की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों से जोड़कर समझा जाएगा, ताकि परिवर्तनों की वास्तविक पृष्ठभूमि सामने आए।

5. नमूना चयन

अध्ययन में 1900–1950 के बीच के प्रमुख एवं प्रतिनिधिक प्रकाशनों का चयन किया जाएगा। चयन इस आधार पर होगा कि वे दलित आंदोलन के वैचारिक विकास, जनजागरण और पहचान-निर्माण में किस हद तक सहायक रहे।

6. डेटा विश्लेषण

संगृहीत सामग्री को विषयवार वर्गीकृत किया जाएगा। संपादकीयों और विचार लेखों में प्रयुक्त शब्दावली, भावनात्मक अभिव्यक्ति और तर्क संरचना की व्याख्या की जाएगी। विभिन्न कालखंडों में भाषा-शैली एवं मुद्दों के विकास की प्रवृत्तियों का वर्णन किया जाएगा।

7. सीमाएँ

- अध्ययन की समय-सीमा 1900–1950 तक सीमित रहेगी
- ग्रामीण स्तर पर प्रसार-संख्या एवं पाठक-समुदाय का पूर्ण डेटा उपलब्ध न होने की संभावना
- उपलब्ध स्रोतों की भौगोलिक सीमाएँ (मुख्यतः मुंबई-पुणे केंद्रित)

IV. परिणाम

1. मराठी प्रेस ने दलित आंदोलन के लिए स्वतंत्र सार्वजनिक मंच का निर्माण किया

1900–1920 तक मुख्यधारा मराठी प्रेस में दलित अनुभव सीमित रूप में या सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किए जाते थे। इससे दलित समुदाय की वास्तविक आवाज़ के लिए नए मंच की आवश्यकता स्पष्ट हुई। 1920 से आंबेडकरवादी पत्रकारिता ने दलितों को अपनी बात स्वयं रखने का माध्यम प्रदान किया। इससे दलित प्रश्न समाज के केंद्र में आए और सत्ता-संरचनाओं को चुनौती मिली।

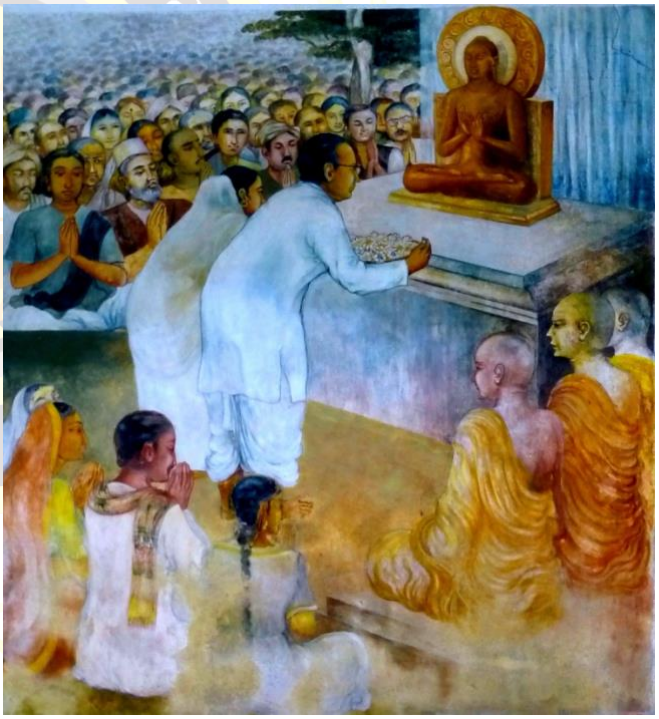

स्रोत: https://en-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Dalit_Buddhist_movement?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=imgs

2. आंबेडकर द्वारा संपादित पत्रों ने राजनीतिक चेतना को सशक्त बनाया

मूकनायक, *बहिष्कृत भारत* और *जनता* जैसे पत्रों ने सामाजिक अन्याय की व्याख्या को राजनीतिक अधिकारों से जोड़ दिया। पहले जहाँ दलित समुदाय केवल सामाजिक सुधार की अपेक्षा करता था, वहीं इन पत्रों के प्रभाव से मतदान अधिकार, शिक्षा-न्याय, आरक्षण, पृथक प्रतिनिधित्व और संवैधानिक संरक्षण जैसे विषय दलित आंदोलन के मुख्य दावे बने।

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

3. दलित अस्मिता और आत्मसम्मान की भाषा का विकास

शोध के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि आंबेडकरवादी प्रेस ने दया, उपचार और सुधार जैसे शब्दों की जगह अधिकार, संघर्ष, स्वाभिमान और समानता की भाषा स्थापित की। इस भाषाई परिवर्तन ने दलितों में सामूहिक पहचान को मजबूत किया और अपमान के सामूहिक अनुभव को राजनीतिक ऊर्जा में बदला।

4. प्रेस के माध्यम से सामाजिक सुधार आंदोलनों में सक्रिय सहभागिता

दलित प्रेस ने मंदिर प्रवेश, शिक्षा, श्रम, अस्पृश्यता उन्मूलन, और स्त्री-प्रश्नों को केंद्र में रखते हुए अनेक अभियानों को वैचारिक समर्थन दिया। इससे दलित आंदोलन केवल विरोध का नहीं बल्कि परिवर्तन को क्रियात्मक रूप से आगे बढ़ाने का आंदोलन बन गया।

5. मजदूर और किसान प्रश्नों के माध्यम से आंदोलन का विस्तार

1930–1950 की अवधि में *जनता* जैसे पत्रों ने दलित समुदाय के आर्थिक शोषण को वर्ग-प्रश्नों से जोड़ा। परिणामस्वरूप दलित चेतना सामाजिक पहचान से आगे बढ़कर आर्थिक-संघर्ष एवं राष्ट्र-राजनीति का भी अभिन्न हिस्सा बनी।

6. उच्च-वर्ण वर्चस्व के बराबर एक वैकल्पिक अबाध मीडिया-स्पेस का निर्माण

जहाँ मुख्यधारा प्रेस में दलितों की आवाज़ को सीमित अवसर मिलते थे, वहीं दलित प्रेस ने नई पत्रकारिता संस्कृति विकसित की जो जातिगत असमानता, धर्माधारित शोषण और सत्ता-पक्षपात को प्रत्यक्ष रूप से चुनौती देती थी। यह स्वतंत्र मीडिया-स्पेस दलित बुद्धिजीवियों के उभार में निर्णायक सिद्ध हुआ।

7. आंदोलन के भीतर नेतृत्व, संगठन और वैचारिक निरंतरता को मजबूती

दलित प्रेस ने विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले दलित समुदायों के बीच संवाद और एकजुटता का विस्तार किया। इससे आंदोलन को दीर्घकालिक ऊर्जा, बौद्धिक नेतृत्व और मजबूत संगठनात्मक संरचना प्राप्त हुई।

V. निष्कर्ष

महाराष्ट्र में 1900 से 1950 के बीच का काल दलित आंदोलन के वैचारिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। इस अवधि में मराठी प्रेस ने न केवल दलित मुद्दों को सार्वजनिक विमर्श तक पहुँचाया, बल्कि समुदाय के स्वाभिमान और अधिकार चेतना को भी मजबूत किया।

शोध से यह स्पष्ट हुआ कि प्रारंभिक वर्षों में मुख्यधारा मराठी प्रेस पर उच्च-वर्ण दृष्टिकोण का प्रभाव अधिक था, जिसके कारण दलित अनुभव प्रायः हाशिए पर रहा। किंतु आंबेडकरवादी पत्रकारिता के उदय के साथ स्थिति में गहरा परिवर्तन आया। *मूकनायक* ने दलित प्रश्नों को पहली बार सीधे राजनीति और सामाजिक न्याय के विमर्श में स्थान दिया। *बहिष्कृत भारत* ने दलितों की सामूहिक पहचान और प्रतिरोध की भाषा को तेज़ किया, वहीं *जनता* ने इस आंदोलन को श्रमिक, किसान और लोकतांत्रिक अधिकारों से जोड़कर व्यापक जनान्दोलन का स्वरूप दिया।

दलित प्रेस ने सामाजिक सुधार को केवल नैतिक मुद्दा मानने की बजाय उसे संरचनात्मक अन्याय से जोड़ा और अधिकार-आधारित संघर्ष को प्राथमिकता दी। इसके कारण दलित आंदोलन एक प्रतिक्रियात्मक स्वरूप से आगे बढ़कर नये सामाजिक मूल्यों, समानता और आत्मसम्मान के निर्माण का आंदोलन बन गया।

प्रेस के माध्यम से बनाए गए इस स्वतंत्र सार्वजनिक क्षेत्र ने दलित बुद्धिजीविता को विकसित होने का अवसर दिया, समुदाय के भीतर संगठित नेतृत्व का निर्माण किया और विभिन्न क्षेत्रों में फैले दलित समाज को एक साझा वैचारिक आधार प्रदान किया। परिणामस्वरूप, दलित आंदोलन की आवाज़ समाज और सत्ता-संस्थाओं दोनों तक अधिक प्रभावी रूप से पहुँची।

अतः कहा जा सकता है कि इस अवधि में मराठी प्रेस दलित आंदोलन का केवल सहायक माध्यम नहीं था, बल्कि वह स्वयं परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में कार्यरत रहा। उसने आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक सहभागिता और समानता के सिद्धांतों को मजबूत करते हुए भारतीय लोकतांत्रिक ढांचे को अधिक समावेशी और मानवीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची

- *Bageshwar, B. R. (2021).* Emergence of Marathi Dalit Periodicals: A Brief Survey. *Fortell, 43, 70–77. (उपलब्ध: Fortell वेबसाइट/ResearchGate)।*
- *Botre, S. (2017).* The Body Language of Caste *(PhD thesis). University of Warwick.*
- *Naregal, V. (2002).* Language, Politics, Elites and the Public Sphere: Western India Under Colonialism. *Anthem Press / Orient Blackswan.*
- *Omvedt, G. (1976/2011).* Cultural Revolt in a Colonial Society: The Non-Brahman Movement in Western India, 1873–1930. *Manohar Publications.*
- *Rao, A. (2009).* The Caste Question: Dalits and the Politics of Modern India. *University of California Press.*
- *Zelliot, E. (1992/2001).* From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement. *Manohar.*
- *Bageshwar, B. R. (2021). "Emergence of Marathi Dalit Periodicals: A Brief Survey."* Fortell, *43, 70–77. (Dalit periodicals before & after 1920, Gopal Baba Walangkar to Ambedkar's newspapers).*
- *"Through 'Mooknayak', Ambedkar Questioned Gandhi's Politics."* Forward Press, *29 January 2020.*

Vol. 14, Issue: 12, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

- *"Bahishkrit Bharat: Ambedkar's Decisive Challenge to Brahmanism."* Forward Press, *30 January 2020.*
- *"Ambedkar and Media."* Round Table India, *2012.*
- *"Seeking Political Alternative: Perspectives on Peasants ..."* EPW Engage, *29 October 2022.*
- *Deshpande, P. (2016). "Orthography, Community and the Marathi Public Sphere."* South Asia: Journal of South Asian Studies, *39(1), 1–20. (Marathi public sphere, language and print; संदर्भ बोट्रे के माध्यम से)।*